आपको तानसेन बनना है, कानसेन नहीं : डॉ. किरण सेठ

भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय में 'भारतीय कला एवं संस्कृति' पर विशेष व्याख्यान संपन्न

चेतना समाचार सेवा

लखनऊ। भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय के राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में आज ह्लभारतीय कला एवं संस्कृतिह्व विषय पर स्पिक मैके के चेयरमैन डॉ. किरण सेठ द्वारा एक विशेष एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान का आयोजन किया गया। अपने सम्बोधन में कुलपति मांडवी सिंह ने डॉ. किरण सेठ का विश्वविद्यालय आगमन पर अभिनंदन करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने स्पिक मैके के साथ अपने पुराने जुड़ाव को स्मरण करते हुए कहा कि संस्था द्वारा भारतीय कला एवं संस्कृति को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य अत्यंत सराहनीय है।

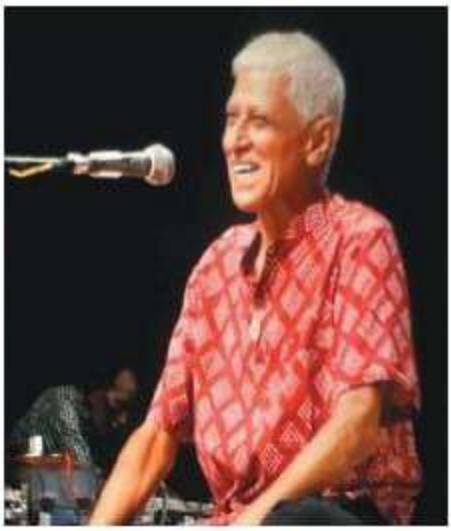

इस अवसर पर डॉ. किरण सेठ ने विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को भारतीय संगीत एवं सांस्कृतिक परम्पराओं की गहनता और समृद्ध विरासत से परिचित कराया। डॉ. सेठ ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि भारतीय संगीत को समझने के लिए अपनी जीवनशैली, खान-पान, रहन-सहन और सोच में भी भारतीयता के मूल तत्वों को आत्मसात करना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रेरक रूप से कहा कि ह्लआपको तानसेन बनना है, कानसेन नहीं।ह्व उन्होंने स्पष्ट किया कि केवल सुनना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जो कुछ सीखा जा रहा है, उसका निरंतर चिंतन, मनन और अभ्यास आवश्यक है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव एस.पी सिंह ने कहा कि स्पीक मैके के साथ विश्वविद्यालय का एमओयू है। भारतीय संगीत व कला के प्रशिक्षण व संवर्धन हेतु हमे इसका सहयोग सतत प्राप्त हो रहा है। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों ने भारतीय संगीत, कला और संस्कृति की विविध परम्पराओं से जुड़े महत्वपूर्ण विचारों को आत्मसात किया तथा व्याख्यान को अत्यंत प्रेरणादायी एवं उपयोगी बताया।